इससे तुझे इस अपयश की प्राप्ति नहीं होगी कि तूने मेरी मित्रता का दुरुपयोग किया और समाज में मानहानि भी नहीं होगी।'

अतएव अर्जुन के लिये श्रीभगवान् का अन्तिम निर्णय यही है कि वह संग्राम करते हुए प्राण-विसर्जन कर दे, परन्तु पलायन न करे।

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्।।३५।।

10.2

भयात्=भयवश; **रणात्**=रणभूमि से; **उपरतम्**=विमुख हुआ; **मंस्यन्ते**=मानेंगे; **त्वाम्**=तुझे; **महारथाः**=महारथी; **येषाम्**=जिन के; **च**=भी; **त्वम्**=तू; **बहुमतः**=सम्मानित; **भूत्वा**=होकर; **यास्यसि**=प्राप्त होगा; **लाघवम्**=तुच्छता को।

अनुवाद

तेरे नाम और यश का सम्मान करने वाले महारथी भी तुझे भयवश ही युद्ध से उपरत हुआ मानेंगे। इस भाँति तू कायर समझा जायगा।।३५।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना निर्णय सुनाते हुए आगे कहा: ''तुझे ऐसा नहीं समझना चाहिये कि दुर्योधन, कर्ण तथा अन्यान्य उपस्थित महारथी तुझे भाइयों तथा पितामह पर द्रवित होकर युद्ध से विरत हुआ मानेंगे। वे तो यही समझेंगे कि तू प्राणभय से युद्ध से विमुख हुआ है। इस प्रकार तेरे सम्बन्ध में उनकी उच्च मान्यता नरकगामिनी होगी।''

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्।।३६।।

10.2

अवाच्यवादान्=अपशब्द; **च**=भी; **बहून्**=अनेक; **वदिष्यन्ति**=कहेंगे; **तव**=तेरे; **अहिताः**=शत्रु; **निन्दन्तः**=निन्दा करते हुए; **तव**=तेरी; **सामर्थ्यम्**=सामर्थ्य की; **ततः**=उससे; **दुःखतरम्**=अधिक दुःखदायी; **नु**=निश्चय ही; **किम्**=और क्या होगा।

अनुवाद

तेरे शत्रु भी बहुत से अपशब्द कहकर तेरी सामर्थ्य का उपहास करेंगे। इससे अधिक दुःख तेरे लिए फिर और क्या होगा?।।३६।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण प्रारम्भ में अर्जुन के अनुचित दयाभाव से बड़े विस्मित हुए थे; उसकी करुणा को उन्होंने अनार्योचित भी कहा। इस प्रकरण में अर्जुन की तथाकथित करुणा के विरुद्ध अपने वचनों को उन्होंने विशद रूप से प्रमाणित किया है।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।३७।।

11.2

हतः=मरकर; **वा**=या (तो); **प्राप्स्यसि**=(तू) प्राप्त होगा; **स्वर्गम्**=स्वर्ग को; **जित्वा**=जीतकर; **वा**=अथवा; **भोक्ष्यसे**=उपभोग करेगा; **महीम्**=पृथ्वी का; **तस्मात्**=